# बाइबल टीचर

वर्ष 15 फरवरी 2018 अंक 3

## सम्पादकीय

### जब मैं बालक था

जब आप छोटे बच्चे थे तब उस समय आप कुछ अजीब हरकतें करते थे और अब यदि आप उनके बारे में सोचें तो आपको बड़ा अजीब लगेगा। बचपन के दिन कई बार भुलाना बड़ा मुश्किल होता है। प्रेरित पौलुस ने लिखा था, "जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाई बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया तो बालकों की सी बातें छोड़ दी। (1 कुरि. 13:11)। एक छोटे बच्चे की सोच समझ तथा बोलचाल बिलकुल भिन्न होती है। बड़ों में और बच्चों में यही फ़रक होता है। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे शारीरिक रूप से बड़े तथा समझ में भी बढ़ें। इसी प्रकार से हम देखते हैं कि बाइबल सिखाती है कि मसीहीयों को अपने विश्वास में तथा आत्मिक बातों में आगे बढ़ना चाहिए। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक कहता है, "समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था तो भी क्या यह अवश्य है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है पर अन्न सयानों के लिए है।" (इब्रानियों 5:12-14)।

जब हम मसीहीयत में आगे बढ़ते हैं तब हमारे अन्दर बदलाव आने चाहिए। कई बार मसीही लोगों के व्यवहार में बदलाव नहीं आता। कई वर्षों के बाद भी उनमें प्रेम तथा दया की कमी होती है। अपने मसीही भाई-बहनों के प्रति उनका व्यवहार अच्छा नहीं होता। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोगों में आत्मिक रूप से बदलाव आए।

यीशु ने एक बहुत बढ़िया बात बोली थी, उसने अपने चेलों से कहा था, "मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती 18:3)। अब पौलुस कह रहा है कि बालकों की सी बातें छोड़ दो और यीशु कह रहा है कि बालकों के समान बनो। शायद कोई कहे यह दोनों बातें विरोधाभास हैं परन्तु ऐसा है नहीं। इसे हमें इस प्रकार से देखना चाहिए कि कुछ बातें ऐसी हैं जो बच्चों में होती है वे हमें अपने अन्दर रखनी चाहिए और कुछ बातें जो बालकों में होती है वे हमें छोड़ देनी चाहिए।

अब हम देखते है। कि छोटे बच्चों में कुछ ऐसी बातें होती है जो हमारे अन्दर होनी चाहिए जैसे छोटे बच्चे अपने माता-पिता में पूरा भरोसा रखते हैं। उन्हें चिंता

करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि भोजन कहां से आयेगा? सोने के लिये घर का क्या होगा? उन्हें अपने माता-पिता पर पूरा भरोसा है। इससे हम यह सीखते हें कि हमें अपने परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना चाहिए क्योंकि वह हमारा पिता है और हमारी आवश्यकताओं को जानता है। यीशु ने कहा था, "इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों तुम को वह क्योंकर न पहनाएगा"? (मत्ती 6:30)

एक और बच्चों में हम विशेषता देखते हैं कि वे बड़े मासूम होते हैं। वे पाप के बारे में कुछ नहीं जानते। जब तक वे बड़े नहीं हो जाते वे बुरे भले को नहीं जानते। हमें भी पाप के प्रति मासूम होना चाहिए। पाप से बचना चाहिए। परन्तु यह भूलना नहीं चाहिए कि यीशु मसीह का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7)।

बच्चों में एक और बात देखने को मिलती है कि वे खुश रहते है। उनके अन्दर एक प्रसन्नता होती है। प्रत्येक सुबह उनके लिये एक नया आनन्द लेकर आती है। मसीहियों को प्रतिदिन परमेश्वर का धन्यवाद करके प्रसन्न रहना चाहिए। प्रेरित पौलुस मसीहीयों से कहता है कि प्रभु में "सदा आनंदित रहो" (फिलि. 4:14)। छोटे बच्चों में, एक और अच्छी बात यह होती है, कि वे दूसरे बच्चों के साथ लड़ते है परन्तु थोड़ी देर में ठीक हो जाते है और ऐसी बात मसीहीयों में भी होनी चाहिए। पौलुस कहता है, "और एक दूसरे पर कृपाल, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।" (इफि. 4:32)।

छोटे बालकों में एक और बात अक्सर देखने को मिलती है कि उनके मन में किसी के प्रति मैल नहीं होता तथा उनका मन ईमानदारी से भरा होता है। वे किसी से भेदभाव नहीं करते। न वे यह देखते हैं कि किसके पास कितना पैसा है। अर्थात् वे भेदभाव नहीं करते। मसीहीयों को और चर्च लीडरों को भी सदस्यों में भेदभाव नहीं करना चाहिए। याकूब कहता है, "हे भाईयों, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो" (याकूब 2:1)। एक और बात हम छोटे बच्चे में देखते हैं कि वह छोटे से खिलौने से खेलेगा अर्थात एक छोटा कुत्ते का पिल्ला होगा उससे भी वह खेलेगा यानि वह साधारण वस्तुओं से भी संतुष्ट रहता है और यही बात परमेश्वर के लोगों को सीखनी चाहिए। कई लोग बहुत चाह रखने की इच्छा में अपने आपको नाना प्रकार की मुसीबतों में फंसा लेते है। किसी ने यह सही कहा है: "बे-हिसाब हसरतें न पालिये, जो मिला है उसे तो संभालिये।" बाइबल कहती है कि "संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है" (1 तीसु. 6:6)।

फिर हम देखते हैं कि पौलुस कहता है कि "जब मैं सियाना हो गया तो बालकों की सी बातें छोड़ दी।" जब हम एक मज़बूत मसीही बन जाते हैं तब हमें कुछ बातों को छोड़ना पड़ता है। यह ऐसी बातें हैं जो बचकाने वाली है। बच्चों में कुछ ऐसी बातें होती है जो बहुत गलत होती है। समय के साथ-साथ इन बातों को अपने में से निकाल देना चाहिए।

छोटे बच्चे बड़े स्वार्थी होते है। एक छोटा सा प्यारा-सा बच्चा केवल अपने बारे में ही सोचता है। चाहे उसकी माँ बीमार हो या कुछ भी हो उसे तो दूध चाहिए। माता-पिता रात भर उसके लिये जागते हैं। चाहे माता-पिता के साथ कोई भी परेशानी हो उसे अपने से मतलब होता है। जब बच्चा बड़ा होता है, हमें उसे सिखाना चाहिए कि स्वार्थी न हो। मसीहीयों में भी स्वार्थपन नहीं होना चाहिए। बाइबल कहती, "हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन, दूसरों के हित की भी चिंता करे" (फिलि. 2:40। मसीही को स्वार्थी नहीं होना चाहिए। एक मसीही पिता अपनी पत्नी तथा अपने बच्चों का ध्यान रखता है। वह स्वार्थी नहीं है। और ऐसे ही एक मसीही पत्नी अपने बच्चों और पति का ध्यान बिना किसी स्वार्थ के रखती है।

एक और बच्चों वाली आदत हमें छोड़नी चाहिए। वो यह आदत है कि जो भी मुंह में आया वो कह दिया। अक्सर छोटे बच्चे मुंह से कुछ भी कह देते है। उन्हें इससे कोई फ़रक नहीं पड़ता कि किसी को उनकी बात से चोट पहुंचे। मसीही लोगों को अपनी जीभ को काबू में रखना चाहिए। बाइबल कहती है, "कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले" (इफि; 4:29) कई बार कलीसिया के सदस्य भी कुछ ऐसी बातें बोल देते है जिससे दूसरों को चोट पहुंचती है।

बच्चों में एक बुरी बात यह भी होती है कि वे कभी संतुष्ट नहीं होते। एक खिलौने के बाद दूसरा तथा फिर तीसरा। वे कुछ देर किसी चीज से खेलते है और फिर छोड़ देते हैं। यदि हम मसीहियत में बढ़ चुके हो तो हम सीख चुके हैं कि संतुष्टि क्या है। पौलुस ने सीखा था और हमें भी यह बात सीखनी चाहिए कि हर हाल में हमें परमेश्वर का धन्यवादी होना चाहिए। पौलुस ने लिखा था, "और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।" (इफि. 5:20)।

एक और बात जो बालकों में पाई जाती है कि वे निराश होना पसंद नहीं करते। यदि आपने पिकनिक जाने के लिये प्रोग्राम बनाया है तो आप उन्हें मना नहीं कर सकते। कई बार हमारे जीवनों में भी ऐसे क्षण आते हैं कि हम निराश हो जाते हैं। परन्तु एक मसीही जब अपने विश्वास में मजबूत हो जाता है तो उसे निराशा का सामना करना सीखना चाहिए। प्रभु की सहायता से आप निराशा का सामना कर सकते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, "जो मुझे सामर्थ देता उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलि. 4:13) कई स्त्रियां बहुत ज़िद्दी होती है और ऐसे ही कई पुरुष भी होते हैं। यह लोग निराशा को स्वीकार नहीं करते।

एक और बड़ी अजीब सी बात छोटे बालकों में देखने को मिलती है कि उनमें जलन की भावना होती है। यदि अपने बच्चे के सामने किसी दूसरे के बच्चे को आप गोद में उठा लें तो आपके बच्चे को ईर्ष्या होगी। यदि आपने अपने बच्चे को नई साईकिल दिला दी तो पड़ोस का बच्चा उससे ईर्ष्या करने लगेगा। बच्चे अक्सर दूसरों की खुशी से जलते है। परन्तु मसीही लोगों में यह बात नहीं होनी चाहिए। किसी ने यदि नई कार या नया घर खरीदा है तो जले नहीं। बाईबल सिखाती है "रोने वालों के साथ रो और खुशी करने वालों के साथ खुश हो।" (रोमियों 12:15)।

यह है एक मजबूत मसीही की विशेषता। छोटे बच्चों में एक और विशेष बात देखी जाती है कि उनमें धीरज बहुत कम होता है। उनको समय से कोई लेना देना नहीं होता। मसीही लोगों को धीरज रखना सीखना चाहिए। बाइबल कहती है, "केवल यही नहीं, वरन हम कलेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि कलेश में धीरज और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।" (रोमियों 5:3-4)।

बालकों में एक और गलत बात होती है कि वे अपनी जिम्मेवारी को नहीं समझते । यह जिम्मेवारी आयु के साथ-साथ आती है। बच्चे अपना स्कूल का होम वर्क करने में ध्यान नहीं देते। माता-पिता कुछ करने को बोलते है वे टाल देते है। मसीहीयों को प्रतिदिन अपने विश्वास में बढ़ना है और जीवन का मुकुट उन्हें ही मिलेगा जो अंत तक अपनी जिम्मेदारी को निभाकर विश्वास योग्य बने रहेंगे। (प्रकाशित 2:10) अपनी जिम्मेवारी हमें समझनी चाहिए। अपने परिवार और बच्चों के प्रति तथा घर के कार्य के प्रति। पति को कमाकर लाना है ताकि परिवार का पालन पोषण हो सके। एक स्त्री की जिम्मेवारी है कि वह अपने परिवार की नींव को दृण करके रखे।

बच्चों में एक और गलत बात यह होती है कि वह अपनी गलती नहीं मानते तथा दूसरों पर अपनी गलती थौंप देते है। वे अक्सर यह कहते हैं कि यह मैंने नहीं किया है। यह सब उसके कारण हुआ है और हारून ने भी ऐसा ही किया था। मूर्तिपूजा के लिये उसने कहा कि यह लोगों के कारण हुआ है मेरा कोई दोष नहीं है। आदम और हव्वा ने भी एक दूसरे पर दोष लगाया था। आज कलीसिया में ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि कुछ लोग बहुत खराब है इसलिये मैं सण्डे को अराधना में नहीं आऊंगा। अर्थात् दूसरों पर आरोप लगाना बड़ा आसान होता है परन्तु एक मजबूत मसीही अपनी गलती के लिये दूसरों को दोषी नहीं ठहराता। एक मसीही को दाऊद की तरह कहना चाहिए।" मैंने गलती की है, मैं क्षमा चाहता हूं" (भजन 51)। कई लड़के लड़कियां अपने अनुचित चुनाव के लिये माता-पिता को दोषी ठहराते है। मसीही लोगों को अपने विश्वास में मजबूती लानी चाहिए और यह मजबूती प्रतिदिन वचन पढ़ने तथा निरंतर अराधना में जाने से होती है।

आज बहुत बड़ी आवश्यकता यह है कि मसीही लोग अधिक से अधिक अपने विश्वास में बढ़ें। अपनी जिम्मेदारियों को समझें। पौलुस मसीहीयों से कहता है, "जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त बनो। जो कुछ करते हो प्रेम से करो।" (1 कुरि. 16:13)। यह सब बातें एक मजबूत मसीही में होनी चाहिए।

प्रभु चाहता है कि आप बच्चे की तरह नम्र बने तथा बच्चों की सी ग़लत बातों को छोड़, दें क्योंकि जब आप सियाने हो गये है तो आपका व्यवहार बदल जाना चाहिए। बच्चों जैसी बातें न करें। कहने का अर्थ यह है कि अपने विश्वास को जो मसीह यीशु में है दृण करें। जीवन के इस स्कूल में हमें बहुत कुछ सीखना है। इसलिये आगे बढ़िये और अपने जीवन से दिखाएं कि आप अपने मसीही जीवन में कितने मजबूत हैं।

# शरीर के काम

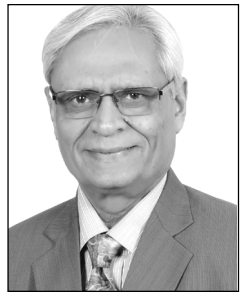

## सनी डेविड

इस सुन्दर अवसर के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो। आज मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं, कि बाइबल में लिखा है व्यभिचार, गंदे काम, और लुचपन, मूर्ति-पूजा, टोना और बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट और विधर्म और डाह, मतवालापन तथा लीलाक्रीड़ा, और इसी प्रकार के और-और जितने भी काम है, जो लोग ऐसे-ऐसे काम करते हैं वे परमेश्वर के राज्य में कदापी प्रवेश न करेंगे। क्योंकि बाइबल कहती है कि ये सब काम शरीर के काम है। (गलतियों 5:19-21)। शरीर के काम, वे काम है, जिन्हें मनुष्य अपने शरीर की लालसाओं की तृप्ति के लिये करता है। मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि है। अर्थात् मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया है। जब मनुष्य किसी वस्तु को बनाता है तो वह उसे किसी उपयोग के लिये बनाता है। परमेश्वर ने मनुष्य की अपनी महिमा के लिये बनाया है। हम सब चाहते हैं कि हमारे बेटे-बेटियां हम से प्रेम रखें। परन्तु यदि सन्तान अपने माता-पिता का कहना न माने और उनकी आज्ञाओं को तुच्छ जाने, तो यह दर्शाता है कि वे अपने माता-पिता से प्रेम नहीं रखते। ठीक यही बात हम परमेश्वर तथा मनुष्य के बारे में भी कह सकते है। परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्रेम रखें। क्योंकि वह हम से प्रेम रखता है। मनुष्य पर परमेश्वर का प्रेम उसकी नाना प्रकार की आशीषों के द्वारा प्रगट है। परमेश्वर हमें बोने के लिये बीज, खाने के लिये भोजन और पहनने के लिये कपड़ा देता है। और न केवल उसे हमारे शरीर की ही चिंता है, परन्तु उसे हमारी आत्मा की भी चिंता है। सो हमारी आत्मा को पाप के कारण नरक में नाश होने से बचाने के लिये परमेश्वर ने अपने वचन को देहधारी बनाकर प्रभु यीशु मसीह के रूप में पृथ्वी पर भेज दिया। यीशु मसीह ने परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर अपने आप को बलिदान करके हम सब के पापों का प्रायश्चित किया। सो हम देखते हैं कि हमारा परमेश्वर हम से कितना अधिक प्रेम करता है। परन्तु जबकि हमारा परमेश्वर हम से इतना अधिक प्रेम रखता है, वह चाहता है कि हम भी उसके साथ प्रेम रखें। क्योंकि उसने हमें बनाया है; उसने हमें शरीर और आत्मा दोनों दिए है, और वह हमारी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करता है। परन्तु यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं पर नहीं चलते, जो वह हमसे कहता है उसे नहीं मानते, तो हम उसके बैरी बन जाते है। यही कारण है कि बाइबल कहती है, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले, अर्थात् जो काम परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है, अर्थात् शरीर के काम करने वाले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे।

परमेश्वर चाहता है कि हमारे काम इस प्रकार के हों कि जिन्हें देखकर लोग हमारे कामों के कारण हमारे परमेश्वर की बढ़ाई करें। (मत्ती 5:16)। वह चाहता है, कि हमारे कामों के द्वारा उसकी महिमा तथा प्रशंसा हो। परन्तु शरीर के कामों को

करके हम उसकी महिमा नहीं कर सकते। क्योंकि शरीर के कामों को हम परमेश्वर की बड़ाई के लिये नहीं करते परन्तु अपने शरीर की इच्छाओं तथा लालसाओं को पूरा करने के लिये करते हैं। परन्तु एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात यह है कि शरीर के कामों के द्वारा न केवल हम अपने आपको अपने परमेश्वर से अलग कर लेते हैं परन्तु ऐसे-ऐसे कामों को करके हम स्वयं अपने शरीर को भी हानि पहुंचाते हैं। जो लोग व्याभिचार, शराब तथा अन्य नशीली वस्तुओं के आदी है, उसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर देखा जा सकता है। इसी प्रकार जो लोग जादू, टोने, इत्यादि करते फिरते है या जो लोग अपने मन में बैर, ईर्ष्या तथा क्रोध इत्यादि को रखते हैं उनके जीवनों पर इन बातों का बुरा असर देखा जा सकता है। परन्तु आज हम इसी प्रकार के एक और शरीर के काम के बारे में देखने जा रहे हैं, जिसका वर्णन बाइबल के लेखक ने ''शरीर के कामों'' के बीच नाम लेकर तो नहीं किया परन्तु निश्चय ही यह काम भी ऐसे ही कामों में शामिल है, क्योंकि उसने कहा, कि ऐसे-ऐसे और भी काम है।

सिगरेट या बीड़ी इत्यादि पीना आजकल बड़ी ही साधारण सी बात समझी जाती है। न केवल बड़े परन्तु छोटे-छोटे बच्चे भी सिगरेट और बीड़ी पीते देखे जा सकते हैं। छोटे-छोटे लड़के या नवयुवक सिगरेट पीने के द्वारा लोगों पर व्यक्त करना चाहते हैं कि अब वे बड़े हो गए हैं। स्कूल और कॉलेजों में न केवल लड़के परन्तु लड़कियां भी धूम्रपान करती है। और अभी मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा था कि आज पुरुषों से अधिक स्त्रीयां धूम्रपान करने लगी हैं। संसार भर में लाखों रुपए की सिगरेट रोज बिकती है और राख में बदल जाती है। केवल बम्बई में ही रोज एक-सौ-दस लाख सिगरेट बिकती हैं जिनकी कीमत बारह लाख रुपए के लगभग होती है। परन्तु क्या आप जानते हैं, कि धूम्रपान करना कितना हानिकारक है? संसार के सभी देशों के डॉक्टरों ने आज यह मान लिया है कि धूम्रपान सिगरेट के प्रत्येक पैकेट के ऊपर अब हम लिखा हुआ पढ़ सकते हैं, कि धम्रूपान स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। संसार में लगभग बारह देशों ने सिगरेट के विज्ञापनों पर रोक लगा दी है। इस वर्ष हमारे देश में विश्व-स्वास्थ्य-दिवस मनाया गया, और उसका विषय था ''धूम्रपान या स्वास्थ्य, चुनाव आपका।''

क्या आप जानते हैं सिगरेट या बीड़ी का प्रत्येक कश आपकी उम्र में से लगभग एक मिनट कम कर देता है? विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सर्वेक्षण के अनुसार बताया गया है, कि जिन आदमियों की मृत्यु चालीस से पैसठ वर्ष की उम्र के बीच फेफड़े के कैंसर से होती है उसका मुख्य कारण 90 प्रतिशत धूम्रपान होता है। इसी प्रकार दमे के रोग से मरने वाले 65 प्रतिशत वे लोग होते हैं जिनकी मौत का कारण धम्रूपान होता है। गले तथा फेफड़े के कैंसर, हृदय रोग इन सब का मुख्य कारण धूम्रपान हैं और यह भी कहा जाता है कि सिगरेट के भीतर निकोटीन नाम का जो नशीला पदार्थ होता है, वह इतना खतरनाक है कि यदि उस पदार्थ को कोई व्यक्ति बिल्कुल थोड़ी सी ही मात्रा में खा ले तो उसकी उसी समय मृत्यु हो सकती है। इसी प्रकार, एक अन्य प्रसिद्ध डॉक्टर का कहना है, कि जो लोग बहुतायत से धूम्रपान करते हैं, वे लोग अपनी प्रत्येक सिगरेट या बीड़ी के प्रत्येक पैकेट के लिये अपने

जीवन के चौंतीस मिनट खो देते हैं। इस प्रकार निरन्तर धूम्रपान करने वाले लोग अपने जीवन के कई बहुमूल्य घण्टे प्रतिदिन धुएं में उड़ा देते हैं परन्तु अधिकांश लोग इन चेतावनियों के ऊपर कोई ध्यान नहीं देते। यद्यपि प्रत्येक पैकेट के ऊपर लिखा होता है कि धूम्रपान करना स्वास्थ्य के लिए, हानिकारक है। तौभी लोग उस हानिकारक वस्तु को दाम देकर भी खरीदने से नहीं रूकते। यह दिखाता है कि पाप मनुष्य को किस प्रकार अपना दास बना लेता है। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है (यूहन्ना 8:34)। आज बहुतेरे लोग धूम्रपान करने के इस प्रकार आदि हो चुके हैं कि वे उसके दास बन चुके हैं। वे बिना दम लगाए रह ही नहीं सकते। परन्तु इस प्रकार न वे केवल अपने स्वास्थ्य को ही हानि पहुंचा रहे हैं, किन्तु वे स्वयं ही अपने लिए स्वर्ग के द्वार को भी बंद कर रहे हैं। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह परमेश्वर के लोगों को लिखकर कहता है, कि ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा, ताकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।'' (1 कुरिन्थियों 3:16, 17)।

मित्रो! परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है। वह उसके साथ सहभागिता रखना चाहता है। वह मनुष्य के भीतर वास करना चाहता है। परन्तु वह पवित्र है, और इसलिये वह किसी भी ऐसे स्थान पर नहीं रह सकता जो अपवित्र है। क्या आप चाहते हैं कि आपका जीवन परमेश्वर के रहने का स्थान बन जाए? सो अवश्य है कि पहले आप अपने जीवन से उन सब अशुद्ध वस्तुओं को निकाल फेंके जिनसे परमेश्वर घृणा करता है, अर्थात् शरीर के कामों को। वे सब काम जिनके द्वारा परमेश्वर की बढ़ाई नहीं होती, परन्तु जो मनुष्य की देह तथा आत्मा को हानि पहुंचाते हैं। पवित्र बाइबल में लिखा है, ''इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय, करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।'' (प्रेरितों 17 : 30, 31)।

मित्रो! परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य शरीर के कामों से अपना मन फिराए। क्योंकि ऐसे-ऐसे काम न केवल मनुष्य की देह को ही नाश करते हैं, परन्तु इन्हीं कामों के कारण मनुष्य को अपनी आत्मा को भी हमेशा के लिए नरक में खोना पड़ेगा। किन्तु शायद आप मुझ से पूछें कि अब तक जो पाप आप ने किये हैं उन सब की क्षमा आपको कैसे मिल सकती है? मित्रो! परमेश्वर बड़ा ही महान है। उसने अपने वचन को देहधारी बनाकर पृथ्वी पर भेजा, और फिर उसे अर्थात् यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़वाकर हम सबके पापों के लिये बलिदान कर दिया, ताकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित ठहरे। सो यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने सब पापों से क्षमा मिल सकती है। यीशु ने प्रतिज्ञा की है, कि जो मुझमें विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा, अर्थात् अपने पापों की क्षमा के लिए जल के भीतर गाड़ा जाएगा मैं उसका उद्धार करूंगा। (मरकुस 16:16)। यीशु हमारा उद्धारकर्ता है। वह न केवल हमारे पिछले

पापों से ही हमारा उद्धार करता है परन्तु यदि हम उसे अपने जीवन का आदर्श बनाकर चलें तो वह हमारी ऐसी अगुवाई करता है कि हम केवल वही काम करें जिनके कारण हमारे परमेश्वर की बड़ाई होती है।

क्या आप शरीर के किसी काम के दासत्व में हैं? प्रभु यीशु मसीह आपको आजाद कर सकता है। उसमें विश्वास कीजिये। उसकी आज्ञाओं को मानिये। वह आपके प्रत्येक पाप से आप को रिहाई दे सकता है। परमेश्वर आपको उसके पास आने की सामर्थ दे।

---

# डाकू का क्रूस पर चढ़ाया जाना

## जे. सी. चोट

परमेश्वर का वचन साफ-साफ और बार-बार कहता है कि जो बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। मसीह यीशु ने स्वयं कहा कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:16)। पतरस ने कहा यह आवश्यक है कि मनुष्य मन फिराए और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले (प्रेरितों 2:38)।

1 पतरस 3:21 में पतरस ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर लिखा कि बपतिस्मा हमें बचाता है, जिस प्रकार नूह और उसका परिवार जल प्रलय से बच गए थे।

परमेश्वर का वचन हमें यह भी बताता है कि बपतिस्मा लेने से हम मसीह को पहन लेते हैं और कलीसिया में मिला दिए जाते हैं (गलतियों 3:26, 27)।

हम सबने एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया (1कुरिन्थियों 12:13) जब हम बपतिसमा लेते हैं तब जल और आत्मा से हमारा नया जनम होता है (यूहन्ना 3:5) इन सब हवालों को देखते हुए कोई कैसे कह सकता है कि बगैर बपतिस्मे के उद्धार प्राप्त हो सकता है? परन्तु फिर भी हम देखते हैं कि बहुत से लोग ऐसी विचार धारा के हैं कि बिना बपतिस्में के ही उद्धार प्राप्त हो सकता है।

बहुत से संप्रदाय के लोग यह शिक्षा देते हैंकि जिस डाकू को क्रूस पर चढ़ाया गया था उसका उद्धार बगैर बपतिस्मा के हो गया था। परन्तु पवित्रशास्त्र में ऐसा लिखा है, "जो कुकर्मी वहां लटकाएं गए थे, उनमें से एक ने उसकी निंदा करके कहा, "क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आपको और हमें बचा।" इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, "क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।" तब उसने कहा, "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुधि लेना।" उसने उससे कहा, "मैं तुझसे सच कहता

हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" (लूका 23:39-43)।

यद्यपि उस डाकू के बपतिस्में के बारे में हम कहीं नहीं पढ़ते, पर ऐसा प्रतीत होता है कि उसका बपतिस्मा हो गया था। क्या मरकुस इसका वर्णन करता है, "यूहन्ना तो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था। सारे यहूदिया प्रदेश के और यरूशलेम के सब रहने वाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।" (मरकुस 1:4-5)।

इसलिये इन पदों को पढ़ने से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस डाकू ने बपतिस्मा लिया था परन्तु बाद में यह चोर बन गया होगा जिसके कारण उसको क्रूस का दण्ड मिला। यह कोई ऐसी पहली या आखरी घटना नहीं होगी कि मनुष्य मन फिराने के बाद पाप में न गिरा हो। आगे विचार करने योग्य कुछ और बाते है :

ऐसा लगता है कि यह डाकू यीशु मसीह के बारे में काफी कुछ जानता था और उस पर उसका काफी विश्वास था। यह उसके स्वयं के शब्दों से प्रमाणित होता है: यहां हम देखते हैं कि तीन लोग हैं जो क्रूस का दण्ड भोग रहे है। वे चेले जिन्होंने मसीह के कदमों पर बैठ कर तीन वर्ष तक शिक्षा पाई थी डरके मारे उसको छोड़ कर भाग गए थे, उनका विश्वास पूरी तरह से डगमगा गया था। परन्तु यह डाकू क्या कहता है? "प्रभु" उसको मसीह के राज्य की आत्मिक स्थिति का पूरा ज्ञान था, वह उससे प्रार्थना करता है, "जब तू अपने राज्य में आए तो मुझे याद रखना।" डाकू यह कैसे जानता था कि क्रूस की मृत्यु से उसका अंत नहीं होगा, या यह कि यह मृत्यु उसको उसके राज्य का राजा बनने से नहीं रोक सकती? हां यह डाकू हमारे प्रभु के बारे में काफी ज्ञान रखता था। वह उसकी शिक्षाओं से अज्ञात नहीं था और इसलिये संभव है कि उसका बपतिस्मा हो गया था।

परन्तु मान लीजिये कि उसका बपतिस्मा नहीं हुआ था, पर इससे कुछ प्रमाणित नहीं होता। यह इस बात को बिलकुल प्रमाणित नहीं करता कि बगैर बपतिसमें के कोई उद्धार पा सकता है। यह डाकू जिस युग में जीवित था वह दूसरा समय था और उस समय की व्यवस्था, आज की व्यवस्था से जिसमें हम रहते है बिलकुल भिन्न थी। उस समय मसीह जीवित था और उसको पूरा अधिकार था कि वह किसी के भी पाप क्षमा कर सकता है और आने वाले राज्य में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा कर सकता था। परन्तु मसीह की क्रूस पर मृत्यु के कारण एक नई व्यवस्था की शुरूआत से हुई और वह थी मसीह की व्यवस्था जिसका वर्णन नये नियम में पाया जाता है। मसीह यीशु की मृत्यु, उसका गाड़ा जाना और तीसरे दिन जी उठना, उसी समय से ही यह व्यवस्था हम पर लागू है। जो व्यवस्था मसीह की मृत्यु से पहले लागू थी हम उसमें नहीं जा सकते और न ही उसको मान सकते हैं और न ही यह आशा कर सकते हैं कि उससे हमारा उद्धार हो जाएगा। हम अपनी सुविधा अनुसार व्यवस्था को नहीं बदल सकते।

इस लेख के पहले भाग में कहा गया था कि बाइबल बड़ी सफाई से यह बताती है कि उद्धार पाने के लिये आवश्यक है कि मनुष्य पहले बपतिस्मा ले। इसके

साथ-साथ यह भी बताना आवश्यक है कि कहीं पर भी परमेश्वर का वचन यह नहीं कहता कि केवल बपतिस्मा लेने से ही उद्धार होता है। और न ही पवित्रशास्त्र यह शिक्षा देता है, कि "केवल विश्वास करने से", "मन फिराने से" या "मसीह का अंगीकार करने से" उद्धार प्राप्त होता है। इसके स्थान पर परमेश्वर का वचन, यह आज्ञा देता है और जितने भी हमने प्रेरितों की पुस्तक में हृदय परिवर्तन के उदाहरण देखे सबसे एक ही बात पता चलती है कि पहले मनुष्य वचन सुने। फिर मसीह के सुसमाचार पर विश्वास लाए, अपने पापों से मन फिराए, इस बात का अंगीकार करे कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले।

पढ़िये रोमियों 10:17 "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।"

इब्रानियों 11:6, "विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है...." प्रेरितों 17:30, "....परमेश्वर सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" रोमियों 10:10, "धार्मिकता के लिये मन से विश्वास और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" मरकुस 16:16, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।"

मसीह हमारा उद्धारकर्ता है और उसको सारा अधिकार है कि हमें बताएं कि उद्धार पाने के लिये हमें क्या करना है। हम इस स्थिति में नहीं है कि इस विषय पर हम उससे कहें कि हमें क्या करना है या क्या नहीं करना है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि कोई यह दलील दे कि हम बगैर बपतिस्में के उद्धार प्राप्त कर सकते हैं या कितने ही यह शिक्षा देते हैं कि बगैर बपतिस्में के भी मनुष्य उद्धार प्राप्त कर सकता है, परन्तु वास्तविकता यह है कि प्रभु कहता है जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। सारा अधिकार प्रभु को दिया गया है और यह ही सत्य है। जब हम अपने पूरे हृदय से उस पर विश्वास करते हैं तो बगैर कोई प्रश्न पूछे या बहस करे हम वही करेंगे जो वह कहेगा। बपतिस्मा लेने से एक मुख्य शिक्षा यह मिलती है कि जब हम अपने पापों के लिये मर गए और बपतिस्मे के द्वारा उसके साथ पानी की कब्र में गाड़े गए तो जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी उस पानी की कब्र से जीवित होकर मसीह में नए जीवन की सी चाल चलें। इस प्रकार हम बपतिस्में के द्वारा मसीह के साथ मारे जाने, गाड़े जाने और दोबारा जीवित होने को चित्रित करते हैं।

अनुवादक: भाई फैरल

# पुराने जीवन का अंत

## डॉ. एफ. आर. साहू (सी.जी.)

"मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़ कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है तो, बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

इस आयत से हम देखेंगे; पुराने जीवन का अंत कैसे होना चाहिए, तदपश्चात् फलदायक जीवन को भी कैसा होना चाहिए?

प्रियो, क्या आपने कभी गौर किया है कि "बीज" जब तक मिट्टी में पड़ कर मर नहीं जाता तब तक उसमें नया पौधा नहीं आ सकता अर्थात् नया पौधा उगने के लिये "बीज" का मरना जरूरी होता है क्योंकि नये पौधे नई सिरे से उगते हैं और उसमें पुराने "बीज" का कोई अंश नहीं रहता।

अध्याय की इस आयत में प्रभु यीशु "बीज" की तुलना अपने स्वयं के गाड़े जाने और मुर्दों में से जी उठने की बात को बता रहा था कि किस प्रकार से उसके जी उठने के द्वारा वह बहुत से फलदायक जीवन लाने वाला था।

आगे उसने अपने चुने हुए चेलों को भी बताया कि उन्हें भी फल लाना होगा, ताकि उनका भी फल बना रहे। (यूहन्ना 15:16)।

प्रियो, हमें इस प्रतीकात्मक भाव को समझना होगा कि फलदायक जीवन केवल पुराने मनुष्यत्व की मृत्यु के बाद ही मिल सकता है।

जैसे कि एक "बीज" जब तक वह भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह फल नहीं ला सकता, ठीक इसी समान "मनुष्य" जब तक अपने पापों के लिये मर नहीं जाता, तब तक वह आत्मिक देह को प्राप्त नहीं कर सकता और न आत्मिकता का फल ला सकता है।

प्रियो, आत्मिक जीवन भी एक ऐसी दशा है जिसमें शारीरिक दशा के लिये मर कर ही आत्मिक जीवन का अनुभव प्राप्त हो सकता है अर्थात् शारीरिक बातों पर नहीं लेकिन आत्मिक बातों पर ही मन लगाते रहना ही फलदायक जीवन के लिये उचित है।

मसीह प्रबंध ही परमेश्वर की योजना का एक ऐसा प्रबंध है जिसमें सब कुछ नया करने की सृजनात्मक शक्ति है, इस लिये मसीह के साथ गाड़े जाने, मर जाने, और मसीह के साथ जिलाए जाने के द्वारा ही कोई नया बन सकता है तथा बदल सकता है, और फलदायक जीवन को भी प्राप्त कर सकता है।

नये पौधे में पुराने "बीज" का कोई अंश नहीं रह जाता क्योंकि वह पूरी तरह से अंकुरित हो गया है।

2 कुरि. 5:17 में वचन कहता है "पुरानी बातें बीत गयी, देखो सब बातें नई हो गयी है" अर्थात् एक व्यक्ति का मसीह में नई सृष्टि हो जाने के बाद उसके लिये सब कुछ नया हो जाता है क्योंकि पुराने जीवन की सारी बातें बीत चुकी होती है जैसे किसान पौधे का इसलिये जतन करते रहता है, ताकि वह बहुत सा फल लाए और अच्छे-अच्छे फल लाए।

फल के लिये एक पेड़ का होना जरूरी होता है और पेड़ के लिये एक पौधे का होना जरूरी है और फलवंत पौधे के लिये पहले पुराने बीज का मर जाना जरूरी होता है, जैसे हमने देखा था कि, "जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो वह बहुत फल लाता है।"

और फल लाने के लिये एक व्यक्ती के लिये उसके पुराने जीवन का अंत होना जरूरी है, क्योंकि हम पुराने जीवन के साथ-साथ प्रभु के लिये कोई भी आत्मिकता का फल नहीं ला सकते इसलिये हम अपने आप को जांचे और परखें, समीक्षा करें कि क्या मेरे पुराने जीवन का अंत हुआ है या नहीं? इफि. 4:22-31 में प्रेरित पौलुस

जो शिक्षा देता है उसे पढ़कर आप समझ सकते हैं।

पुराने नियम के नबियों ने इस्राएलियों को परमेश्वर के लिये फल लानेवाली दाखलता के रूप में प्रस्तुत करना चाहा पर वे लोग फल लाने में असफल रहे।

नये नियम में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने भी सदूक्की और फरीसियों को चेतावनी देते कहा था "मन फिराने के योग्य फल लाओ, उसने आगे यह भी कहा, "अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है इसलिये जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में झोंका जाता है" (मत्ती 3:7-11)।

प्रभु यीशु ने भी कहा था, "जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में डाला जाता है" (मत्ती 7:19)।

हम देखतें कि संसार में लोग परमेश्वर के लिये अच्छे फल लाने में सफल नहीं हुए इसलिये प्रभु यीशु ने इस बात को स्वयं पर लागू करते हुए इस बात का दावा किया था कि "सच्ची दाखलता मैं हूं" (यूहन्ना 15) और उसने यह भी कहा था, "मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो जो मुझमें बना रहता है, और मैं उसमें, बहुत फलता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझमें बना न रहे तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता और लोग उन्हें बटोर कर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती है" (यूहन्ना 15:5-6)। आज बहुत से लोग बपतिस्मा मात्र ले लेने के द्वारा मसीही होने का तो दावा करते हैं, पर मन फिराने के योग्य फल नहीं लाते।

वे पुराने जीवन का त्याग नहीं कर पाते तथा दूसरी बात यह है कि "मसीह" में फल लाने के लिये हमें सिर्फ प्रभु यीशु मसीह की आवश्यकता है।

अत: हम यीशु मसीह के जितने करीब होंगे उतने ही परिपक्व होते जायेंगे तथा प्रभु और उसके वचन में बने रहकर ही हम फल लाने के योग्य विकसित हो सकते है।

यीशु ने एक बार कहा था- "तुम मुझमें बने रहो और मैं तुम में, जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझमें बने न रहो तो नहीं फल सकते" (यूहन्ना 15:4)।

हमें यह बात हमेशा याद रखनी चाहिये कि यीशु ही हमारा एक मात्र श्रोत है जिसमें बने रह कर ही बढ़ने और फलदायक वृक्ष होने के लिये प्रशस्त हो सकते हैं, जैसे कोई पेड़ नालियों के किनारे लगाया जाता है और धूप के दिनों में भी उसके विषय में चिंता की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वह तब भी फलते रहता है।

भजन का लेखक दाऊद लिखता है, "वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया और अपनी ऋतु में फलता है" (भजन 1:30 यिर्म. 17:7, 8 को भी पढ़ लें।

पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि हर एक व्यक्ति जो यीशु मसीह के पास आएगा वह मसीह में फूले फलेंगा, जैसा लिखा है "जीवन की रोटी मैं हूं, जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा और जो मेरा मांस खाता है और मेरा लहू पीता है वह मुझमें स्थिर बना रहता है और मैं उसमें जैसे पिता के कारण मैं जीवित हूं, वैसी ही वह भी जो मुझे खाएगा

मेरे कारण जीवित रहेगा" (यूहन्ना . 6:35, 56, 56)।

प्रियो, भरमाने वाले पुराने जीवन के अंत के बाद अब हम मसीह में एक नया जीवन, उद्धार, छुटकारा और अनंत जीवन प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि यीशु का यह वादा है कि वह सब कुछ नया कर देगा? (प्रकाशित 21:5-6)।

---

# क्या स्त्री पुरुष से कम है?

## बैटी बर्टन चोट

कुछ लोगों का मानना है कि स्त्री पुरुष की दासी से बढ़कर और कुछ नहीं है, चाहे वह उसका पति ही हो। उसका काम केवल बच्चे जनना, घर की देखभाल करना और खाना बनाना है। कई धर्मों में तो यह भी सिखाया जाता है कि स्त्री का उद्धार स्त्री के रूप में नहीं हो सकता। उसे पुरुष के रूप में जन्म लेना अनिवार्य है।

इस विचार को नकारते हुए "विमेन द लिब्रेशन मूवमेंट" जो संसार के विकसित देशों में फैल गया है, यह घोषणा करता है कि स्त्री हर प्रकार से पुरुष के बराबर है। यह लहर न केवल बराबरी को बनाना चाहती है, बल्कि इसका उद्देश्य पुरुषों के स्थापित अधिकार को दुरुस्त करने के लिए संसार की स्त्रियों के लिए शक्ति प्राप्त करना हैं। इस व्यवहार से स्त्रियों और पुरुषों के बीच प्रतिस्पर्धा (कम्पटीशन) की भावना बढ़ गई है, जो कि शत्रुता, कटुता और परिवार के टूटने का कारण है।

हमारी दिलचस्पी यह जानने में है कि परमेश्वर स्त्री की भूमिका और पुरुष के साथ उसके संबंध के बारे में क्या कहता है। न तो मूर्तिपूजक विचार और न ही लिब्रेशन मूवमेंट परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त है। परन्तु बाइबल में से हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार स्त्री के काम, भूमिका और उसकी स्थिति को साफ देख सकते हैं।

क्या स्त्री पुरुष से कम है? बाइबल की पहली पुस्तक, उत्पत्ति में हमें इस प्रश्न का उत्तर मिलता है। परमेश्वर ने जीव-जनतुओं और पशुओं को बनाया और सबसे अंत में उसने मनुष्य को सृजा। फिर वह उन्हें "आदम के पास ले आया कि देखे, वह उनका क्या-कया नाम रखता है; और जिस-जिस जीवित प्राणी का जो-जो नाम आदम ने रखा, वही उसका नाम हो गया। सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखें, परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला, जो उससे मेल खा सके" (उत्पत्ति 2:19, 20)।

"कोई ऐसा सहायक जो उससे मेल खा सके" यह शब्द हमें बताते हैं कि परमेश्वर का इरादा स्त्री को अपने साथ मेल खाने वाले का साथी, यानी आदमी के जीवन के अनुभवों और जिम्मेदारियों में साथ देने के लिए एक सहायक बनाने का था।

स्त्री को अस्तित्व में लाने के लिए, "यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसुली निकालकर उसकी संती मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया" (उत्पत्ति 2:21, 22)।

आदम ने जब उस स्त्री को जिसे परमेश्वर ने बनाया था देखा तो उसने कहा, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है: सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है" (उत्पत्ति 2:23)।

उत्पत्ति की पुस्तक में अंतिम टिप्पणी है, "इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे" (आयत 24)।

सृष्टि के इस दृश्य के तथ्यों से हमें कई बातें पता चल सकती है :

- आदम को पहले बनाया गया था; इसलिए वह प्रथम अर्थात् स्त्री से पहले था।
- आदम को जहां भूमि की मिट्टी से बनाया गया था, वहीं स्त्री को आदम की पसली में से हड्डी लेकर बनाया गया था। इसलिए मूलतया वह पुरुष में से ही निकाली गई थी।
- हड्डी उसके सिर में से नहीं ली गई, ताकि कहीं वह उसके सिर पर न चढ़ जाए: न उसके पैर से ली गई ताकि पुरुष स्त्री को रौंद न डाले; इसके विपरीत हड्डी उसकी पसली में से ली गई थी ताकि वह उसके साथ सहयोगी हो।
- परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को मूलतया शारीरिक रूप में पूर्ण के दो अर्ध-भागों के रूप में बनाया। दोनों के मिलन के बिना मनुष्यजाति का प्रजनन नहीं हो सकता था। इसलिए मनुष्यजाति को बनाए रखने में उनके योगदान के लिए दोनों के महत्व की आवश्यकता है।
- पुरुष और स्त्री के वयस्क मनुष्यों के रूप में, विवाह में आपस में एक-दूसरे के सपुर्द होने पर, आरंभ से परमेश्वर की योजना यह थी कि वे एक नई एकता में मिलकर रहे ताकि वे "एक तन" हो जाएं। मैं फिर कहती हूं कि शारीरिक, भावनात्मक और जीवन यापन में वे एक पूर्ण के दो अर्थ - भाग है।
- परमेश्वर की इच्छा थी कि पुरुष और स्त्री जो दो अलग-अलग व्यक्ति है, परिवार की एक नई इकाई को बनाने के लिए परिवार के अन्य सदस्यों को छोड़ दे।

सो आरंभ से ही परमेश्वर ने स्त्री को इसलिए बनाया ताकि वह पुरुष की हो सके, अर्थात् उसके साथ मिलकर वह उसकी सहायक बने। उसके जीवनों, परिवार उनके काम और परमेश्वर तथा अन्य मनुष्यों के साथ उनके संबंधों के बढ़ने में, स्त्री के साथ मेल खाने के लिए इस प्रकार से बनाया गया, ताकि उनके जीवन पूर्ण हो। सच्चाई यह है कि स्त्री मूलतया पुरुष में से ही निकली थी, यानी किसी भी प्रकार से गुण या महत्व में वह उससे कम नहीं है।

---

# उजियाला हो

## वेयन जैक्सन

संसार की सृष्टि के पहले दिन, परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो" (उत्पत्ति 1:3 रोशनी पहली बार हुई थी। रोशनी क्या है? यह ऊर्जा का एक रूप है जो "किरणों" में पाया जाता है। एक बार परमेश्वर ने प्राचीनकाल के सयाने, अय्यूब से पूछा था,

"उजियाले के निवास का मार्ग कहां है?" (अय्यूब 38:19)। यह अद्‌भुत तथ्य है कि प्रकाश एक "मार्ग" में पाया जाता है और यह सीधी रेखा में चलता है। प्रकाश 1, 8 6000 मील से अधिक प्रति सैकण्ड की गति से चलता है (प्रति घण्टा चौसठ करोड़ मील 1 मील = 1.6 किमी)। सूर्य का प्रकाश धरती पर आने में आठ से अधिक मिनट लगते हैं (सूर्य 930 करोड़ मील दूर है)।

परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया था वह "बहुत ही अच्छा" (उत्पत्ति 1:31) और उसमें प्रकाश भी शामिल है। प्रकाश अच्छा है क्योंकि इसे बिना हम बादलों को, पक्षियों को, हरी-हरी घास को या इस कागज पर छपे शब्दों को नहीं देख सकते। हम चीजों को साफ या धुंधला देखते हैं जो इस पर निर्भर करता है। चीजों को साफ सा धुंधला या इस आधार पर देखते हैं कि उन पर कितनी प्रकाश की किरणें पड़ रही है। प्रकाश अच्छा है क्योंकि बिना इसके पौधे नहीं हो सकते और हमें खाने को अच्छी सब्जियां और फल नहीं मिलते। न ही हमें मांस खाने को मिलता क्योंकि जानवरों को जीवित रहने के लिए पेड़ पौधों का खाना आवश्यक है। प्रकाश अच्छा है क्योंकि यह कई जीवाणुओं को मार डालता है जो हमारे लिए हानिकारक होते हैं यदि वे उतनी तेजी से बढ़ जाते जैसे कई बार वे अंधकार में बढ़ते हैं। डॉक्टर लोग भी ऑप्रेशन करने के लिए प्रकाश की किरणे इस्तेमाल करते हैं। आपने लेज़र सर्जरी के बारे में सुना है? हमें परमेश्वर के कितने धन्यवादी होना चाहिए कि उसने हमारे लिये रोशनी बनाई।

---

# अपनी कलीसिया का सिर केवल मसीह है और इसका मुख्यालय केवल स्वर्ग में है

## चार्ल्स स्कॉट

कलीसिया के सिर मसीह ने नये नियम के प्रेरितों और भविष्यक्ताओं को "सब सत्य" में अगुआई के लिए पवित्र आत्मा दिया था (यूहन्ना 16:13; इफि. 3:3-6)। उनके वचन से पहली शताब्दी की कलीसिया को अगुआई मिली थी और कलीसिया के नियम बनाने के लिए कोई सांसारिक मुख्यालय नहीं था। उन्होंने नये नियम वाले पवित्र शास्त्र को लिखा और इसके बाद के हर युग के लिए नया नियम मसीह की ओर उसकी कलीसिया को चलाने का सम्पूर्ण और अंतिम वचन है (यूहन्ना 16:13; यहूदा 1:3; गलातियों 1:6-8; 2 तीमुथियुस 3:16:17)। मसीह ने झूठे शिक्षकों के विरूद्ध चेतावनी दी थी जिन्होंने अलग-अलग शिक्षाएं देकर लोगों को गुमराह करना था।

संसार की हर स्थानीय कलीसिया में बिशप और डीकन होते थे। बिशप का अर्थ है निगरान। किए जाने वाले काम की निगरानी के लिए अध्यक्ष का होना आवश्यक है, इसलिए उन्हें अध्यक्ष कहा जाता था। इन्हीं लोगों को ऐल्डर या पास्टर (पासबान) कहा जाता था। ऐल्डर या प्राचीन का अर्थ है बूढ़ा। वे बूढ़े, अनुभवी पुरुषों को चुनते

थे, जिन्हें पास्टर भी कहा जाता था, जिसका अर्थ चरवाहा (परमेश्वर के झुंड की कोमलता से अगुआई करने वाला) है। इन अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल एक ही पद के लिए किया जाता था (प्रेरितों 20:24 व 28; फिलिप्पियों 1:1; प्रेरितों 14:23; इफिसियों 4:11; 1 पतरस 5:1-4)। प्रचारकों को तब तक "पास्टर" नहीं कहा जाता था, जब तक वे ऐल्डरों (पास्टरों या पासबानों) के समूह में से नहीं होते थे। यह भी ध्यान दें कि प्रचार करने वाले पुरुषों को "फादर" या "रैवरेंड" आदि नामों से नहीं पुकारा जाता था (मत्ती 23:8-9; भजन संहिता 111:9; अंग्रेजी संस्करण देखें)। प्रचारकों को "इवेंजलिस्ट" भी कहा जाता था, जो सुसमाचार सुनाने वाले के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है। प्रचारक घूमकर प्रचार करते हो या एक ही स्थान पर रहकर, उन्हें इवेंजलिस्ट भी कहा जाता था। उनका काम वचन का अध्ययन करना और उसे सुनाना होता था (1 तीमुथियुस 4:1-5)। प्रचारक आर्थिक सहायता ले सकता था (1 कुरिन्थियों 9:13-16), परन्तु प्रेरित पौलुस जैसे कई लोग हाथ से कमाई करके खाते और प्रचार करते थे (प्रेरितों 18:1-3; प्रेरितों 20:34-35; 2 तीमुथियुस 2:2-4)। हर सदस्य को चाहिए कि सहायता के लिए जो कुछ भी वह कर सकता/सकती है, करे।

---

# अपने आपको शिष्टतापूर्वक और विचारशीलता से सजाओ ( 1 पतरस 3:1-7 )

## डुएन वार्डन

कितनी अजीब विडम्बना है कि स्त्री पुरुष में समानता की इस पीढ़ी की सैनिक प्रोत्साहन का प्रमाण आमतौर पर जीतने पर पराजित ही होता है। नर नारी "समान" नहीं है। यह सच है कि स्त्रियों के बच्चे और पुरुष युद्ध में जाते हैं। समानता के नाम पर हम स्त्रियों को युद्ध में भेज तो सकते हैं, परन्तु पुरुषों के पास बच्चे नहीं होंगे। पुरुषों या स्त्रियों के पक्ष में प्राकृतिक या सामाजिक अन्तर हर बात में काम नहीं करते। उदाहरण के लिए मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण हो या शारीरिक कमजोरी के, पुरुषों की मृत्यु स्त्रियों की अपेक्षा जल्दी होती है। समाज और प्रकृति विभिन्न और असमान ढंगों से पुरुषों और स्त्रियों पर बोझ लाधते हैं। "नर नारी के बीच लड़ाई" के लिए इन असमानताओं को अधार बनाना मूर्खता है।

कोई कानून या जन-जागृति उन बोझों को खत्म नहीं कर सकती जो पुरुषों के रूप में पुरुषों पर या स्त्रियों के रूप में स्त्रियों पर होते हैं। एक-दूसरे के साथ और आस-पास के संसार के साथ संबंध में दोनों को निभाने के लिए अलग-अलग भूमिका दी गई है। आपसी सम्मान के संदर्भ में भावानात्मक और शारीरिक अन्तरों को स्वीकार करना ही वह मार्ग है जिसमें से पतरस, ने अपने पाठकों को जानने का आग्रह किया।

**भद्र और शांत मन की भीतरी सुन्दरता ( 3:1-4 )**

3:1-6 में पतरस ने पहले स्त्रियों को सम्बोधित किया और फिर 3:7 में पुरुषों को। इसमें असमानता स्पष्ट दिखाई देती है, परन्तु यह निर्णय करना आसान नहीं है कि इस असमानता में किसका पक्ष लिया गया है। यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं को रूकावट डालने वाली और कष्टदायक मानना चाहते हैं तो संभवतया हम यही निष्कर्ष निकालेंगे कि पतरस की टिप्पणियां पुरुषों के पक्ष में पहले से उसके मन में थी। दूसरी ओर यदि हम पवित्र शास्त्र को उन लोगों के लाभ के लिए जिन्हें सम्बोधित किया गया है पवित्र आत्मा के द्वारा दी गई ईश्वरीय सलाह समझते हैं, तो हो सकता है कि हम निष्कर्ष निकालें कि पतरस स्त्रियों के पक्ष में था। स्त्रियों के लिए उसके निर्देश को चार विषयों की बात करने के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है।

**अधीनता**

पतरस ने आरंभ किया, "हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के आधीन रहो...." (3:1)। पहले पतरस ने इन मसीही लोगों को मानवीय अधिकार के अधीन रहने का आग्रह किया था (2:13) और सेवकों को उसने अपने स्वामियों के अधीन रहने का आग्रह किया था (2:18)। "तुम भी" वाक्यांश पिछली आयतों और स्त्रियों को दी गई इस ताड़ना के बीच विचार के आगे बढ़ने की ओर ध्यान दिलाता है। अधीनता जीवन एक भाग है। किसी भी प्रयास में यदि एक से अधिक लोग शामिल हैं तो उनमें से किसी न किसी का इंचार्ज बनना आवश्यक है। जिसे अधिकार दिया गया है, हो सकता है कि वह सबसे बेहतर व्यक्ति हो या न, किसी दिशा की ओर न बढ़ने से बेहतर है कि दूसरे या तीसरे सबसे बेहतर व्यक्ति को इंचार्ज बना दिया जाए।

अधीनता के बिना अधिकार का अस्तित्व नहीं होगा। पतरस के शब्दों से यह लगता है कि पत्नी अपनी पसंद चुन सकती है कि वह अधीन होगी या नहीं। मैं ऐसे कुछ परिवारों को जानता हूँ जिनमें पत्नी के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं होता। या तो वह अपने पति की अधीनता को मान लेती है या वह उसे अदालत में ले जाती है। जिस पति की पत्नी स्वेच्छा से उसके अधीन रहती है वह कितना ही आशीषित है। पत्नियों से "अधीन होने" को कहकर पतरस कह रहा था कि "अपने पति को अपने परिवार का अगुवा बनने दो।" मसीही व्यक्ति के लिए अपने परिवार का मुखिया बन पाना कठिन होगा यदि उसकी पत्नी ने यह सोच लिया है कि वह उसे नहीं बनने देगी।

सरकारों के हो या स्वामियों के या पतियों के, अधीन होने का अर्थ दी गई बातों के अनुसार भूमिका को स्वीकार करना है। किसी के मूल्य, योग्यता या समझ का मूल्यांकन करना बहुत दूर की बात है। पतरस ने कहा कि पत्नी को अपने पति के अधीन होना चाहिए। माना यह गया है कि पति मसीही नहीं है। जैसे मसीही लोगों के अच्छे कार्य और अधीन होने वाला व्यवहार अन्य जातियों में परमेश्वर की महिमा का कारण बनता है (2:12) और अज्ञानता को खामोश कर देता है (2:15) वैसे ही मसीह में अपने पतियों को मसीह में लाने के लिए पत्नियों के अधीनता वाले व्यवहार

का बहुत प्रभाव होगा। यह स्पष्टता आज की तरह ही पतरस के पाठकों में भी सत्य थी कि स्त्रियों की अपेक्षा परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के संदेश को ग्रहण करने में अधिक थी। कोई संदेह नहीं कि बहुत से पुरुष स्वर्ग में अनन्तकाल का आनन्द इसलिए लेंगे क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नियों के अधीनता के व्यवहार में मसीही जीवन के फलों को देखा है।

**शुद्धता**

अपने पतियों पर पत्नियों के प्रभाव का विवरण 3:2 में मिलता है: "तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर।" पतरस ऐसे ढंग का विवरण दे रहा था, जिससे उन पत्नियों का जीवन होना था। "जब वे तुम्हारे जीवनों की.... शुद्धता को देखते हैं।" शुद्धता का जीवन ऐसा है जो अशिष्ट या अनुचित व्यवहार के किसी भी सुझाव से मुक्त है। शायद यह पक्षपाती है, परन्तु पुरुष उन स्त्रियों से जिनसे वह प्रेम रखते हैं, भलाई के ऊंचे से ऊंचे मापदण्डों की अपेक्षा करते हैं। अपनी पत्नियों, माताओं और बहनों में भी वही सदगुण और शुद्धता देखना चाहते हैं। चाहें तो आप इसे पुरुष की अंध भक्ति कह सकते हैं परन्तु यह एक तथ्य है कि पुरुष उसी स्त्री का सम्मान करते हैं जो अपना लगाव और निकटता उस एक व्यक्ति के लिए सुरक्षित रखती है जो उसके जीवन में है।

एक प्रोफेसर एलन ब्लूम ने कुछ वर्ष पूर्व अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में एक खोजपूर्ण टिप्पणी दी थी:

यह अजीब-सी बात है कि थके से थके और मूर्ख माताओं और पिताओं ने अपनी बेटियों को सिखाया है... "वह तुम्हारा आदर या तुमसे शादी नहीं करेगा यदि तुम उसे उसकी मनपसंद की चीज आसानी से दे दोगी" - वर्तमान स्थिति का सबसे सत्य और खोजपूर्ण विश्लेषण बन गया है।"

यह "थकी हुई और मूर्ख" शिक्षा थी या नहीं इस पर सवाल हो सकता है। दिलचस्प बात यह समझ है कि जब स्त्रियां शुद्ध जीवन जीने में नाकाम रहती है तो उन्हें पछताना पड़ता है। पत्नी को अपने पति से आदर और प्रशंसा तभी मिलेगी यदि उसका जीवन शुद्ध हो।

**भय**

एक पत्नी का पवित्र चालन-चलन अविश्वासी पति को मसीह में ला सकता है। आयत 2 में यह भय और अधीनता से परमेश्वर के सामने खड़े होना है। भय पत्नी का वह गुण नहीं है जिसे जब उसका मन चाहे चालू कर दे और जब चाहे बंद कर दे। जब वह रविवार को अपने कपड़ों के साथ अलमारी में दयालुता, परिश्रम और विचारशीलता को लटका देती है तो भय की उसकी कमी एक मुद्दा बन जाती है। परमेश्वर का भय व्यक्तिगत था और यह सार्वजनिक जीवन में पत्नी द्वारा दिखाई जाने वाली भाषा, भक्ति, प्रार्थना और मसीही उदारता की सराहना करेगा।

**भीतरी सुन्दरता**

पतरस यह लिखते हुए कहता है "तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहिनना" (3:3) वह यह सिफारिश नहीं कर रहा था कि वह कभी बाल न बनाएं या गहने न पहनें। वह स्त्रियों

को उचित संतुलन और अन्दरूनी सुन्दरता के लिए कह रहा था। साफ सुथरे और आकर्षक होने की उम्मीद की जाती है। परन्तु कपड़े पहनने, गहने और "बाल गूंथने" के लिए "शालीनता और दीन मन का अविनाशी गुण" नजरअंदाज करने का अर्थ आत्महत्या होगा। अपने पति के लिए आकर्षक होने के अपने ढंग से पत्नी बहुत कुछ कह देती है। यदि उसका आकर्षण केवल शारीरिक है, तो वह उसका मन प्रभु की ओर नहीं ला पाएगी। मसीह की तरह उसका व्यवहार, उसकी कोमलता और उसकी दीनता, भय और शुद्धता ही है, जो अन्त तक काम करेगी।

हमें यह समझने में सावधानी बरतनी होगी कि पतरस पति के मसीह के आज्ञापालन की जिम्मेदारी उसकी पत्नी के कंधों पर नहीं डाल रहा था। कई पुरुष इतने दुष्ट होते हैं, और अन्य इतने उदासीन कि उनकी पत्नियां चाहे कुछ भी कर लें वह उन्हें नहीं बदल सकती। पतरस पत्नियों को जिम्मेदार नहीं ठहरा रहा था। वह यह कह रहा था कि विवेकी और भक्त स्त्री चाहेगी कि वह अपना विश्वास और अपनी आशा अपने पति को भी बताए। उसने इसी कारण से यह निर्देश दिया।

पतरस ने स्त्री को अच्छे निर्णय, धैर्य से सहने और भलाई में असाधारण होने को कहा। एक बुद्धिमान और सहायक पत्नी के विवेक, अच्छे निर्णय और विचारवान होने का प्रशंसा करने वाला पतरस अकेला नहीं था। अलग्जैंडर ने लिखा था:

वह जो अपने पति के शांत होने तक कभी जवाब नहीं देती,

या, यदि वह उस पर हुक्म चलाती है, तो कभी दिखाती नहीं है कि उसकी चलती है; बात मानकर, अधीनता स्वीकार करके, झुककर मन भावती है, बात मानकर, उसके चेहरे की मुस्कुराहट और बढ़ जाती है।

उसकी भावना शायद पतरस की भावना से अधिक हटकर नहीं थी।

---

# लोगों के साथ विश्वास की मांग के अनुसार व्यवहार करना (याकूब 2:1-13)

## जेम्स थॉम्पसन

परमेश्वर के परिवार के लोगों का जीवन वैसा ही होना चाहिए जैसा वे कहते हैं कि उनका विश्वास है। मसीही लोगों को अपने जीवनों और अपने विश्वास में सम्बध दिखाने के लिए याकूब एक टेस्ट देता है। वह आराधना में जाने वाले दो लोगों की तस्वीर दिखाता है, जिनमें एक धनवान है और दूसरा निर्धन है। वह पूछता है कि पाठक ध्यान दें और देखें कि दोनों के साथ कैसा व्यवहार होता है। दूसरे लोगों के साथ, चाहे हम उन्हें जानते नहीं होते, हमारा व्यवहार इस बात का संकेत देता है कि हम परमेश्वर पर क्या विश्वास रखते हैं। पिता के साथ अपनी संगति से हम अपने मानवीय सम्बंधो को अलग नहीं कर सकते। यूहन्ना संक्षेप में कहता है, "यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखें; तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता" (1 यूहन्ना 4:20)।

**ताड़ना ( 2:1 )**

याकूब का सबक इस ताड़ना के साथ आरंभ होता है: "हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो" (2:1)। पत्री के आवश्यक स्वभाव की रेखा से मेल खाती, यह बात आज्ञा के रूप में पढ़ी जानी चाहिए। फिलिप्स में इसका अनुवाद है, "हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु में विश्वास के साथ दम्भ को कभी मिलाने की कोशिश न करो।" "मेरे भाइयो, यह मानते हुए कि जैसा तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह में करते हो, जो महिमा में राज करता है, कभी दम्भ न दिखाना।" यह संस्करण कुछ अधिक अस्पष्ट हो सकता है, याकूब के अर्थ के काफी निकट हो सकता है, "मेरे भाइयो! हमारे प्रभु यीशु मसीह अर्थात् महिमा के प्रभु में विश्वासियों के रूप में अपने जीवन में, तुम अपने बाहरी रूप के कारण अलग ढंगों से लोगों के साथ कभी व्यवहार न करना।"

अगली कई आयतों में हर बार इस आज्ञा को विस्तार मिलता है।

**उदाहरण ( 2:2-4 )**

आयतें 2 से 4 मसीही लोगों की सभा में संचालन करने वालों के लिए नैतिकता की एक किस्म देती है। यह मानना सुरक्षित होगा कि आरंभिक मसीही सभाओं में लोग आते थे। याकूब ने ऐसे किसी व्यवहार को देखा होगा, जिसका उसने उल्लेख किया। याकूब न तो कहता है और न इससे कुछ फर्क पड़ता है कि आनेवाले लोग मसीही है या गैर मसीही। दोनों ही मामलों में दिखाया गया वह व्यवहार गलत है।

परन्तु याकूब हमें धनवान व्यक्ति के विषय में कुछ बताता है। जिसने सोने की अंगूठी और मखमली वस्त्र पहने थे (आयत 2)। जिससे लगे कि वह कोई शाही व्यक्ति या चुना हुआ अधिकारी है। धनवान होने के अलावा वह शक्तिशाली व्यक्ति लगता है।

ये गुमराह भाई क्या सोच रहे थे? इन्हें क्या लगा कि मखमली वस्त्र अच्छे लोगों की पहचान, जबकि फटे पुराने कपड़े उन्हें पहनने वालों के चरित्र का ब्यान करते हैं? क्या उन्हें लगा कि किसी की सम्पत्ति से यह पता चलता है कि वह कितना भला है? कोई भी कैसे मान सकता है कि यीशु को "जाति-पाति" स्वीकार्य होगी?

पहली सदी के मसीही लोगों पर अत्यधिक कठोर होने से पहले हम अपने आप से पूछ लें कि कहीं वैसे ही विचारों और कार्यों के दोषी, हम भी तो नहीं है। जिन लोगों को हम निकम्मे और बेकार समझते हैं यदि हमारे मण्डलियों पर उनका आना हो जाए तो हमारी क्या प्रतिक्रिया होगी। अपनी मण्डलियों के किसी भी आनेवाले के साथ हम कैसा व्यवहार करते हैं? कुछ साल पहले डिक मार्सियर ने एक लेख लिखा था। इस लेख में कुछ चकित करनेवाली जानकारी और निष्कर्ष थे।

एक आदमी यह जानने के लिए कि कलीसियाएं वास्तव में कैसी लगती हैं, अलग-अलग रविवारों में 18 विभिन्न कलीसियाओं में गया और उस लेख के अनुसार जिसमें कहानी छपी थी, उस व्यक्ति ने कहा, "मैं आगे जाकर बैठ गया। आराधना के बाद, मैं धीरे से पीछे को चला गया, फिर सबसे आगे निकलते हुए एक और रास्ते में बीचों-बीच पीछे को चला गया। मैंने एक आदमी से, मुझे एक विशेष जगह अर्थात संगति का कमरा, प्रचारक के अध्यनकक्ष तक ले जाने को कहा।" यह सोचकर कि वहां चाय मिलेगी मैं वहां बैठा रहा। मैंने अपने स्वागत में होने वाली बातों को नापने

के लिए एक पैमाने का इस्तेमाल किया। नापने के उसके अंक इस प्रकार थे:

2210–आराधक की मुस्कान के लिए
2210–पास बैठे व्यक्ति के अभिवादन के लिए
2100–नाम पूछने और बताने के लिए
2200–दोबारा आने के निमंत्रण के लिए
1000–किसी दूसरे आराधक का परिचय कराने के लिए
2000–प्रचारक से मिलने के निमंत्रण के लिए

क्या आप जानना चाहेंगे कि उसे क्या पता चला? 18 कलीसियाओं में 11 कलीसियाओं को 100 अंको से कम मिले और 5 से 20 से भी कम अंक पाए। उसका निष्कर्ष था: "डॉक्ट्रिन चाहे बाइबल की हो सकती है, गाना प्रेरणादायक हो सकता है, सरमन विश्वास बढ़ाने वाला हो सकता है, परन्तु किसी आगन्तुक को ऐसा कोई न मिले जिसे इस बात की परवाह हो कि वह वहां है, तो वह दोबारा वहां कभी नहीं जाएगा।"

आपको क्या लगता है कि हमें कितने अंक मिलेंगे? यह इतना आवश्यक है कि हम में से हर एक आराधना में आनेवालों को यह अहसास दिलाने का भरपुर यत्न करे कि उनका स्वागत हुआ है, उन्हें सराहा गया है और उनकी जरूरत है। इस रविवार उन लोगों तक पहुंचने के लिए जिन्हें आप नहीं जानते विशेष प्रयास करें।

क्या याकूब हमसे भी उतना ही परेशान होता, जितना पहली सदी के उन मसीही लोगों से हुआ था, जो पक्षपात दिखा रहे थे?

पक्षपात का दिखावा इस बात का प्रमाण है कि हम अपने विश्वास को व्यवहार में नहीं ला रहे है। यीशु, जिसके पदचिन्हों पर हमें चलना है, ने पक्षपात नहीं दिखाया। आपको लगता है कि यदि यीशु फरीसियों को वही बताता जो उन्हें लगता था कि वे उसके हकदार है, तो वे यीशु को स्वीकार करते। यीशु बाहरी दिखावे से प्रभावित नहीं हुआ बल्कि मन के अन्दर झांकता था। यहां तक कि फरीसियों ने भी उसकी इस बात को माना जब उन्होंने कहा, "तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता" (मत्ती 22:16)। इसी प्रकार यीशु सामाजिक रुतबे या धन से भी प्रभावित नहीं होता था। वह धनवान फरीसी के बजाय निर्धन विधवा से प्रभावित हो गया था। यीशु बाहरी बातों को पीछे करके पापियों के जीवन की क्षमता को देख सकता था। वह शमौन के अन्दर एक चट्टान को देख सकता था, जो कभी किसी को दिखाई नहीं दी। लोगों के ठुकराए हुए चुंगी लेने वाले मत्ती में उसने एक विश्वासयोग्य चेला देखा। कुएं पर आई स्त्री में, जिसके पापपूर्ण जीवन के कारण उसे समाज से निकाल दिया गया था, यीशु ने एक बड़ी फसल के माध्यम को देखा। यदि हम यीशु के पद चिन्हों पर चलना चाहें तो इस बात को नजरअंदाज करके कि कोई व्यक्ति क्या है, यह देखना आवश्यक है कि वह क्या कर सकता है।

**विस्तार ( 2:5 )**

पक्षपात गलत है क्योंकि यह परमेश्वर के व्यवहार से, विशेषकर निर्धन लोगों के प्रति उसके व्यवहार से मेल नहीं खाता (2:5, 6क)। याकूब पक्षपात पर अपनी शिक्षा

को केवल धनवानों और निर्धनों तक सीमित नहीं कर रहा है, चाहे लगता है कि यह उसके समय की सबसे बड़ी मांग है। उसके पाठकों को यह समझना आवश्यक है कि नजरअंदाज किए जा रहे निर्धन व्यक्ति का परमेश्वर के मन में एक विशेष स्थान है। यह संभावना अधिक है कि निर्धन व्यक्ति सुसमाचार को ग्रहण करेगा क्योंकि वह इस संसार की वस्तुओं पर उतना निर्भर नहीं है। हमारे गलत व्यवहार के कारण वह उन लोगों के लिए जिनसे परमेश्वर प्रेम रखता है राज्य की विरासत को जानने से रोक रहे हो सकते हैं।

इस सब के अलावा, केवल यह विचार करें कि धनवान लोग मसीही लोगों से कैसे व्यवहार करते हैं (2:6ख, 7)। याकूब सब धनवानों को दोषी नहीं बना रहा या उन पर आरोप नहीं लगा रहा। वह केवल उनकी बात कर रहा है जिनके साथ उनका सम्बंध था। याकूब उनमें पाई जाने वाली तीन बुराइयों की बात करता है–मसीही लोगों का शोषण करना, उन्हें कचहरियों में घसीटना और यीशु के पवित्र नाम को बदनाम करना। इन पंक्तियों के बीच में याकूब पूछता है, "संसार में तुम उन्हें पक्षपात क्यो दिखाते हो?"

याकूब जबर्दस्ती से अपनी बात को वापस ले आता है। वह उस बात का उदाहरण देता है जिसे वह शाही व्यवस्था कहता है: "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो।" शाही व्यवस्था को लागू करते हुए वह संकेत देता है कि मसीही चरित्र की मूल परीक्षा दूसरों के साथ हमारे कार्य और व्यवहार की है।

"दूसरों के साथ सही व्यवहार करो" कहना तो बहुत आसान है, पर इसे व्यवहार में लाना उतना ही कठिन। आमतौर पर दूसरे लोगों के साथ सही व्यवहार करने और सूक्ष्म क्षेत्र हमारे लिए दिक्कत खड़ी करते हैं। हो सकता है कि हम खुलकर किसी व्यक्ति या समूह से पूर्वाग्रह से व्यवहार न करें, परन्तु हो सकता कि हम अपने साथ असहमत व्यक्ति की आलोचना कठोरता से करें।

हमारी ओर नुकीली गेंद फेंकता है, जिसे पकड़ना कठिन है: "क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा" (2:10)। ऐसा लगता है जैसे याकूब सवाल का अंदाजा लगा रहा है, "पक्षपात दिखाने की बात पर इतना शोर क्यों?" याकूब हमें दिखाना चाहता है कि कोई भी पाप जो परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है, वह परमेश्वर के साथ संगति को तोड़ना है। यदि मैं परमेश्वर की सब आज्ञाओं का पालन करूं, परन्तु जान-बुझकर एक को तोडूं, तो मैंने उसके साथ संगति तोड़ दी है। हमारे इस संदर्भ में इसका अर्थ यह है कि यदि मैं काले, गोरे, मैक्सिकन, रूसी, नेपाली लोगों को केवल इसलिए नापसंद करूं कि वे काले, गोरे, मैक्सिकन, रूसी, नेपाली हैं, तो मैं अपनी आत्मा को खतरे में डाल रहा हूं। हत्या और व्यभिचार पर की गई याकूब की टिप्पणियां (आयत 11) पक्षपात के गंभीर स्वभाव को दिखाने के लिए हैं। आम तौर पर हम उन्हीं को बड़े पाप मानते हैं, पर याकूब हमें दिखाना चाहता है कि पक्षपात दिखाना भी वैसा ही पाप है।

स्पष्टतया यदि हम "राज व्यवस्था" को तोड़ें तो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। क्योंकि परमेश्वर हमारी बातों, कामों तथा व्यवहारों का न्याय करेगा। इसलिए हमें इस प्रकार जीना आवश्यक है, जिससे परमेश्वर हम से प्रसन्न हो। आयत 13 में याकूब पहाड़ी उपदेश में से यीशु के शब्दों को सुनाता है कि दयावंत लोगों के ऊपर

दया की जाएगी। हम में से कई लोग केवल दयावंत होने के अलावा सब कुछ है। परमेश्वर दया की तलाश में है, इसलिए हमें लोगों के प्रति अपने व्यवहार को बदलने की आवश्यकता है।

---

# बड़ा बदलाव ( रोमियों 6 )

## कोय रोपर

*बदला हुआ जीवन अत्याधिक महत्व के*
*बदलने वाले अनुभव से आरंभ होता है...।।*

आज अद्‌भुत बदलाव संभव हैं। पानी उस टरबाइन पर गिरकर पहिये में बदल जाता है जो पानी की शक्ति को विद्युत शक्ति में बदल देता है। इतने छोटे-छोटे अणु जिन्हें नंगी आंखों से देखना असंभव है न्यूक्लियर हथियारों में बदल जाते हैं जिनमें पूरे शहर को बर्वाद करने की सामर्थ होती है। कोई स्त्री अपने बाल रंगाने के लिए ब्यूटी पार्लर, अपनी नाक सीधी करवाने के लिए डॉक्टर के पास, नये दांत लगवाने के लिए दांतों के डॉक्टर के पास और जवान दिखने के लिए भार घटाने जा सकती है- यह कितना बड़ा बदलाव है।

परन्तु रोमियों 6 अध्याय सबसे अद्‌भुत बदलाव की बात करता है वह बड़ा बदलाव व्यक्ति में तब आता है जब वह मसीही बनता है। मसीही बनने से पहले वह परमेश्वर के अनुग्रह से बाहर होता है परन्तु मसीही के रूप में वह परमेश्वर का बालक है। उससे पहले वह आत्मिक आशिषों से वंचित था; उसके बाद उसे मसीह में सभी आत्मिक आशीष प्राप्त होती है। पहले वह अनन्तकाल तक दण्ड का दोषी था; बाद में वह अनन्त जीवन पाया हुआ है। इस बड़े बदलाव का सबसे अद्‌भुत पहलू यह है कि यह सब इस तथ्य के बावजूद होता है कि वह अपनी सहायता आप करने के योग्य नहीं था; उसे उद्धार परमेश्वर के दान के रूप में मिला है।

उस परिवर्तन के महत्व को समझने के लिए जो मसीही बनने पर आता है, हमें यह समझना आवश्यक है कि पापपूर्ण मनुष्य के लिए स्वर्ग के योग्य होने हेतु बदलना आवश्यक है। एक बिगड़े हुए पाप से भरे, शैतान की आज्ञा मानने वाले बालक को प्रेम करने वाले और धर्मी और परमेश्वर के आज्ञा मानने वाले बालक में बदलना आवश्यक है। तौभी परमेश्वर के अनुग्रह से यह बदलाव हो सकता है और होता भी है, जेलोतेसी शिमौन और मत्ती चुंगी लेने वाला समर्पित शिष्य बन सकते हैं। शाऊल जो सताने वाला था, वह पौलुस प्रचारक बन सकता है, यूहन्ना जो "गर्जन का पुत्र" था, प्रेम का प्रेरित बन सकता है। कुरिन्थी लोग जिन में से कई "...वैश्यागामी... मूर्तिपूजक.... परस्त्रीगामी ... लुच्चे... पुरुषगामी... चोर.... लोभी... पियक्कड़.... गाली देने वाले... अंधेर करने वाले थे", वे "धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे" (1 कुरिन्थियों 6:9-11) और उन्हें "परमेश्वर की कलीसिया" और "पवित्र लोग" कहा जा सकता था (1 कुरिन्थियों 1:2)।

रोमियों 6 अध्याय इस बदलाव की तीन सच्चाइयां बताता है।

### यह बदलाव क्या है?

रोमियों 6 खोलकर बताता है कि इसकी सीमा कहाँ तक है। हम पाप में थे, परन्तु अब पाप के लिए मर गए हैं। पौलुस पूछता है, "क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत

हो?" फिर वह कहता है, "कदापि नहीं, हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?" (रोमियों 6:1, 2)। आयत 11 भी कहती है कि हम अपने आप को "पाप के लिए मरा" हुआ समझें।

हम पाप के दास थे, परन्तु अब पाप से स्वतंत्र हो गए हैं। पौलुस कहता है कि उद्धार होने पर "हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा" (रोमियों 6:6, 7)। हमें उद्धार दिया गया है ताकि "हम आगे को पाप के दास्तव में न रहें।" बाद में पौलुस रोमियों को बताता है कि वे "किसी समय पाप के दास थे" परन्तु फिर आगे कहता है कि उन्हें "पाप से छुड़ाया गया" था (रोमियों 6:17, 18; तुलना 6:20, 22)।

रोमियों 6 कहता है कि उद्धार पाने पर हमें "स्वतंत्र किया" जाता है (तुलना यूहन्ना 8:32), पर यह नहीं कहता कि हमें बिल्कुल ही छूट मिल जाती है। बल्कि हम "धर्म के दास" (रोमियों 6:18) और "परमेश्वर के दास" (रोमियों 6:22) हो जाते हैं। वास्तव में पूर्ण स्वतंत्रता जैसी कोई बात नहीं है। लोग स्वतंत्रता और दास्ता के बीच की बात नहीं चुनते है। बल्कि वे यह चुनते हैं कि वे किस के दास बनेंगे। भोगी व्यक्ति जो केवल सुख के लिए जीता है और अपने आपको पूरी तरह से आजाद होने की कल्पना करता है वास्तव में अपने इस जनून का गुलाम है।

परन्तु कोई हैरान हो सकता है कि फिर मसीही होने का क्या लाभ है? यदि दास ही बने रहना है तो मसीही क्यों बने? पौलुस इस प्रश्न को पहले से भांप लेता है और इसका उत्तर देता है: "जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे। सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उनसे उस समय तुम क्या फल पाते थे? क्योंकि उनका अंत तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अनन्त जीवन है क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:20-23; तुलना 6:16)।

मसीह के पीछे चलना चुनकर व्यक्ति हर प्रकार की रूकावटों या अधिकार से पूर्ण रूप से स्वतंत्र होना नहीं चुनता बल्कि वह परमेश्वर का गुलाम होना चुनता है। ऐसी पसंद क्यों की जाती है? इनाम के कारण, धार्मिकता के गुलाम होने के कारण व्यक्ति को अनन्त जीवन मिलता है। यदि वह पाप का गुलाम रहे तो उसे मृत्यु के अलावा कुछ और नहीं मिलता। आप किसके गुलाम होना चुनेंगे?

सौ से अधिक साल पहले अब्राहम लिंकन ने गुलामों की आजादी की यानी दासता से मुक्ति की घोषणा को जारी किया। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व यीशु ने आत्मिक दासता से मुक्ति की घोषणा जारी की, जिसमें सब लोगों के लिए पाप से स्वतंत्र होने का अवसर दिया गया।

हम पुराने गुलाम थे, परन्तु अब एक नया जीवन जीते हैं। पौलुस ने यह कहने के बाद कि हमारा उद्धार हुआ है ताकि हम "नए जीवन की सी चाल" चल सकें (रोमियों 6:4), ध्यान दिलाया कि "हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया"।